मीराबाई के सुबोध पद

वियोगी हरि

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

मीराबाई के सुबोध पद

नित्य पठन
और
मनन के लिए

•

संकलन-टीका
वियोगी हरि

•

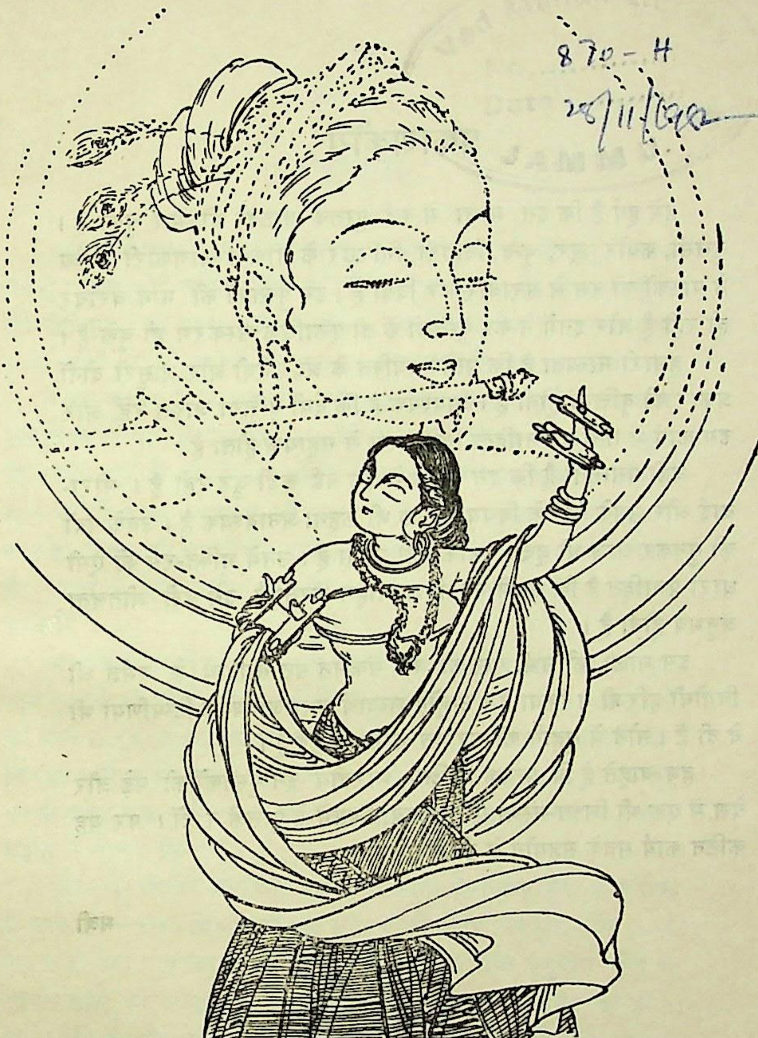
१९८२

सस्ता साहित्य मण्डल
सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

प्रकाशक
यशपाल जैन
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
एन ७७, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली

पहली बार : १९८२
मूल्य : रु. २.५०

मुद्रक
संजय प्रिंटर्स
मानसरोवर पार्क, शाहदरा, दिल्ली-३२



भक्ति-रस-मीन मीराबाई

प्रकाशकीय

हमें हर्ष है कि इस माला में कई पुस्तकें पाठकों को मिल चुकी हैं। तुलसी, कबीर, सूर, वृन्द, बिहारी, गिरिधर के लोक-कल्याणकारी काव्य ने पाठकों को रस से सराबोर कर दिया है। इन पुस्तकों की मांग बराबर हो रही है और इनमें ने कई पुस्तकों के तो एकाधिक संस्करण हो चुके हैं।

हमारी मान्यता है कि प्रत्येक व्यक्ति के अंदर दैवी और आसुरी दोनों प्रकार की वृत्तियां होती हैं। आवश्यक है कि दैवी वृत्तियां जाग्रत रहें, और इस कार्य में संतों का साहित्य विशेष रूप से सहायक होता है।

बड़ी प्रसन्नता है कि इस माला में एक नई कड़ी जुड़ रही है। मीराबाई और उनके पदों के विषय में कुछ भी कहना अनावश्यक है। उनके पदों को सुनकर आज भी हृदय पुलकित हो उठता है। उनमें भक्ति-रस की ऐसी धारा प्रवाहित है कि उसमें जो भी अवगाहन करता है, उसे बड़ी शीतलता अनुभव होती है।

इस माला की सभी पुस्तकों का संकलन संत-साहित्य के मर्मज्ञ श्री वियोगी हरिजी ने किया है। उन्होंने शब्दार्थ तथा आवश्यक टिप्पणियां भी दे दी हैं। सोने में सुहागे की कहावत चरितार्थ हुई है।

हम चाहते हैं कि प्रत्येक शिक्षित भारतीय इन पुस्तकों को पढ़े और देश में एक भी शिक्षा-संस्था ऐसी न रहे, जिसमें ये पुस्तकें न हों। पर यह कठिन कार्य सबके सहयोग से ही हो सकेगा।

—**मंत्री**

प्रस्तावना

भक्तमालाकार नाभाजी ने मीराबाई की तुलना व्रजगोपिका के साथ की है। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। प्रेमपराभक्ति की साकार मूर्ति व्रजगोपिकाओं को माना गया है, यथा 'व्रजगोपिकानाम् ।' भारतेन्दुजी ने भी 'गोपी प्रेम की ध्वजा' यह कहा है। मीराबाई गिरधरगोपाल के प्रेम-रंग में अनन्य रूप से रंग गई थीं, भक्ति-रसामृत का पान सर्वस्व त्यागकर उन्होंने किया था। मिथ्या लोकलाज को लात मार दी थी। संसारी अंकुश की परवा नहीं की थी। निर्भय होकर प्रियतम कृष्ण का यश-कीर्तन किया था। पैरों में घुंघरू बांधकर और हाथ में करताल लेकर, भक्तिरस में मग्न हो, वे नृत्य भी करती थीं। नाभाजी के शब्दों में "भक्ति-निसान बजया-कैं, काहूतें नाहिन लजी, लोक-लाज-कुल-शृंखला तजि मीरा गिरधर भजी।"

मीराबाई जोधपुर के संस्थापक राठौड़ राजा राव जोधाजी के पुत्र राव दूधाजी की पौत्री और रत्नसिंह की इकलौती सन्तान थी। मीराबाई का जन्म सं १५५५ वि० के लगभग हुआ था। बचपन से ही उन्होंने श्री-गिरधर गोपाल को अपना इष्टदेव मान लिया था। बाल्यावस्था में ही उनकी माता चल बसीं और तब राव दूधाजी ने उनका लालन-पालन मेड़ता में लाकर किया।

मीरा का विवाह मेवाड़ के महाराणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज के साथ सं० १५७३ वि० में सम्पन्न हुआ। भोजराज का कुछ काल बाद देहान्त हो गया। परन्तु बचपन से ही श्रीकृष्ण के प्रति अनुराग होने के कारण अपने को उन्होंने विधवा नहीं माना। गिरधर गोपाल को ही वे अपना पति मानने लगीं। संसार से विरक्ति तथा श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य अनुरक्ति का जीवन वे बिताने लगीं। सत्संग और कीर्तन के रस में वे आकंठ डूब गईं।

कुल-मर्यादा त्याग देने के कारण उनको बार-बार सताया गया और दण्ड भी दिया गया, परन्तु वे तो निडर थीं। अपने अनन्य व्रत को नहीं त्यागा। मेवाड़ को छोड़कर वृन्दावन चली गईं और वहां श्रीजीव गोस्वामी का उन्होंने सत्संग-लाभ लिया।

मीराबाई अन्त में द्वारका चली गईं। मेवाड़ और मेड़ता दोनों राज्यों ने उनको द्वारका से लौटा लाने का प्रयत्न किया, परन्तु वे नहीं लौटीं। रणछोड़जी के मन्दिर में जाकर, कहते हैं, भगवान की मूर्ति में ही वे समा गईं। उनका भगवान में तदाकार होने का समय सं० १६०३ वि० माना गया है।

मीराबाई ने जिन पदों की रचना की, वे अनुपम हैं। एक-एक पद में गहरी भक्ति की भावना दीखती है। विनय, उत्कंठा, विरह और प्रियतम से मिलन के पद अनूठे हैं।

कुछ पद निर्गुण निराकार के साधक सन्तों के घाट का स्मरण दिलाते हैं, किन्तु उन पदों में भी गिरधर गोपाल की झलक-झांकी का झिलमिल दर्शन होता है। मीराबाई के अनेक पद सामान्य जनता के कंठहार बन गये हैं।

मीराबाई के पदों की भाषा मुख्यतः मेवाड़ी राजस्थानी है। अनेक पदों में गुजराती, ब्रजभाषा और खड़ी बोली तथा उस काल में जनप्रचलित उर्दू, फारसी के भी शब्द पाये जाते हैं।

मीराबाई के पदों का संकलन और सम्पादन कई विद्वानों ने किया है। उनके जीवन पर और उनकी रचनाओं पर भी अनेक विद्वानों ने खासा प्रकाश डाला है। सन्त-साहित्य के मर्मज्ञ आचार्य परशुराम चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित 'मीराबाई की पदावली' हमारी दृष्टि में सर्वोत्तम है। शब्दार्थों में हमने उक्त पदावली से कृतज्ञतापूर्वक सहायता ली है।

इस संकलन में जो थोड़े-से पद लिये हैं, उनके हमने विभाग कर दिये हैं : प्रार्थना, बिरह, दर्शनानन्द, प्रेमालाप, मिलनोत्तर प्रार्थना, निश्चय, प्रेम, सिखावन, नाम, गुरु-महिमा तथा प्रकीर्ण।

—वियोगी हरि

अनुक्रम

□□

□□

भक्तिस्वरूपा मीरा

सदरिस गोपिन प्रेम प्रगट कलिजुगहिं दिखायो।
निरअंकुस अतिनिडर, रसिक जस रसना गायो॥
दुष्टनि दोष विचारि, मृत्यु को उद्दिम कीयो।
बार न बांको भयो, गरल अमृत ज्यों पीयो॥
भक्ति-निसान बजाय कैं, काहूतें नाहिंन लजी।
लोक-लाज कुल-शृंखला, तजि मीरां गिरधर भजी॥

—नाभादास

लाज छांडि गिरधर भजी, करी न कछु कुलकानि।
सोई मीरां जगविदित, प्रगट भक्ति की खानि॥
ललिता हूं लइ बोलिकै, तासों हो अति हेतु।
आनंद सों निरखत फिरै, वृन्दावन रसखेत॥
नृत्यत नूपुर बांधिकैं; नाचति लै करतार।
विमल हियौ भक्तिन मिली, तृन सम गन्यो संसार॥
बंधुनि विष ताकों दियौ, करि बिचार चित आन।
सो विष फिरि अमृत भयौ, तब लागे पछितान॥

—ध्रुवदास

मीराबाई के सुबोध पद

प्रार्थना

राग धुनपील्

हरि बिन कूण गती मेरी।
तुम मेरे प्रतिपाल कहिये मैं रावरी चेरी॥
आदि अंत निज नाँव तेरो हीयामें फेरी।
बेर बेर पुकार कहूं प्रभु आरति है तेरी॥
यौ संसार बिकार सागर बीच में घेरी।
नाव फाटी प्रभु पाल बाँधो बूड़त है बेरी॥
बिरहणि पिवकी बाट जोवै राखल्यो नेरी।
दासि मीरा राम रटत है मैं सरण हूँ तेरी॥१॥

शब्दार्थ : कूण=कौन, क्या। हीयामें फेरी=हृदय में याद करती रहती हूं। आरति=उत्कंठा, चाह। यौ=यह। पाल बांधो=पाल तान लो। बेरी=नाव का बेड़ा। नेरी=निकट।

राग सहाना

मीरा को प्रभु साँची दासी बनाओ। झूठे धंधों से मेरा फंदा छुड़ाओ॥
लूटे ही लेत विवेक का डेरा। बुधि बल यदपि करूँ बहुतेरा॥
हाय! हाय! नहिं कछु बस मेरा। मरत हूँ बिबस प्रभु धाओ सवेरा॥
धर्म उपदेश नितप्रति सुनती हूँ। मन कुचाल से भी डरती हूँ॥
सदा साधु-सेवा करती हूँ। सुमिरण ध्यान में चित धरती हूँ॥
भक्ति-मारग दासी को दिखलाओ। मीरा को प्रभु सांची दासी बनाओ॥
२॥

शब्दार्थ : विवेक=सत्य और असत्य का निर्णय। डेरा=स्थान। सवेरा=शीघ्र, जल्दी।

राग सारंग

सुण लीजो बिनती मोरी, मैं शरण गही प्रभु तेरी।
तुम (तो) पतित अनेक उधारे, भवसागर से तारे॥
मैं सबका तो नाम न जानूँ, कोई कोई नाम उचारे।
अम्बरीष सुदामा नामा, तुम पहुंचाये निज धामा॥
ध्रुव जो पांच वर्ष के बालक, तुम दरस दिये घनस्यामा॥
धना भक्त का खेत जमाया, कबिरा का बैल चराया॥
सबरी का जूंठा फल खाया, तुम काज किये मनभाया।
सदना औ सेना नाई को तुम कीन्हा अपनाई॥
करमा की खिचड़ी खाई, तुम गणिका पार लगाई।
मीरां प्रभु तुमरे रंगराती या जानत सब दुनियाई॥३॥

शब्दार्थ : सुण लीजो=सुन लीजिए। नामा=महाराष्ट्र के भक्त नामदेव। कबिरा का बैल चराया=कबीरदास के बैल को चराने ले गये। (कबीर साहब के प्रसंग में बैल चराने की यह घटना मिलती नहीं है। सम्भव है, मीराबाई के समय में कबीर साहब के सम्बन्ध में ऐसी कोई लोककथा प्रचलित हो गई हो।) भाया=प्रिय, पसन्द। करमा=करमा बाई, जो भगवान जगन्नाथ की भक्त थी। यह खिचड़ी का भोग लगाया करती थी। आज भी पुरी में जगन्नाथजी के प्रसाद में खिचड़ी दी जाती है।

राग आसावरी

प्यारे दरसन दीज्यो आय, तुम बिन रह्यो न जाय॥
जल बिन कमल, चंद बिन रजनी। ऐसे तुम देख्यां बिन सजनी॥

आकुल व्याकुल फिरूँ रैन दिन, बिरह कलेजो खाय ।।
दिवस न भूख, नींद नहिं रैना, मुख सूं कथत न आवै बैना ।।
कहा कहूं कछु कहत न आवै, मिलकर तपत बुझाय ।।
क्यूं तरसावो अंतरजामी, आय मिलो किरपाकर स्वामी ।।
मीरां दासी जनम जनम की, पड़ी तुम्हारे पाय ।।४।।

शब्दार्थ : रजनी=रात्रि । सजनी=दासी । कलेजो खाय=बिरह कलेजे को मरण जैसी पीड़ा पहुंचा रहा है। बैना=वचन । पाय=चरण ।

राग रामकली

अब तो निभायाँ सरेगी, बांह गहेकी लाज ।
समरथ सरण तुम्हारी सइयां, सरब सुधारण काज ।।
भवसागर संसार अपरबल, जामें तुम हो झयाज ।
निरधारां आधार जगत गुरु तुम बिन होय अकाज ।।
जुग जुग भीर हरी भगतन की, दीनी मोच्छ समाज ।
मीरां सरण गही चरणन की, लाज रखो महाराज ।।५।।

शब्दार्थ : निभायां=निबाहने से ही । सरेगी=बनेगी । अपरबल=प्रबल, अपार । झयाज=जहाज, आश्रय । निरधारां=निराधारों, असहायों ।

राग सूहा

स्वामी सब संसार के हो सांचे श्रीभगवान ।
स्थावर जंगम पावक पाणी धरती बीज समान ।।
सब में महिमा थांरी देखी कुदरत के करबान ।
बिप्र सुदामा को दालद खोयो बाले की पहचान ।।
दो मुट्ठी तंदुल की चाबी दीन्ह्यों द्रव्य महान ।
भारत में अर्जुन के आगे आप भया रथवान ।।

अर्जुन कुलका लोग निहार्‌या छुट गया तीरकमान।
ना कोई मारे ना कोई मरतो, तेरो यो अग्यान।
चेतन जीव तो अजर अमर है, यो गीतारो ग्यान॥
मेरे पर प्रभु किरपा कीजौ, बांदी अपणी जान।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर चरण कंवल में ध्यान॥६॥

शब्दार्थ : थांरी=तुम्हारी। करबान=चमत्कार। दालद=दरिद्रता। बालेकी=बचपन की। तन्दुल=चावल। कुलका=अपने ही कुटुम्ब का। निहार्‌या=देखा। गीतारो=गीता का। बांदी=दासी।

बिरह

राग प्रभाती

राम मिलण रो घणो उमावो, नित उठ जोऊं बाटड़ियाँ।
दरस बिना मोहि कछु न सुहावै, जक न पड़त है आँखड़ियाँ॥
तड़फत तड़फत बहु दिन बीते, पड़ी बिरह की फांसड़ियाँ।
अब तो बेग दया कर प्यारा, मैं छूं थारी दासड़ियाँ॥
नैण दुखी दरसणकूँ तरसैं, नाभि न बैठें सांसड़ियाँ।
रात-दिवस हिय आरत मेरो, कब हरि राखै पासड़ियाँ॥
लगी लगन छूटणकी नाहीं, अब क्यूं कीजै आँटड़ियाँ।
मीरा के प्रभु कब र मिलोगे, पूरो मनकी आसड़ियाँ॥७॥

शब्दार्थ : घणी=घनी, बहुत अधिक। उमाव=उमंग। बाटड़ियाँ=बाट, राह। जक=चैन। फाँसड़ियाँ=फांसी। साँसड़ियाँ=सांसें। पासड़ियाँ=समीप। आँटड़ियाँ=आपत्ति, बाधा। आसड़ियाँ=आशाएँ।

राग जैजैवंती

गली तो चारों बंद हुई, मैं हरिसे मिलूं कैसे जाय।
ऊंची नीची राह लपटीली, पांव नहीं ठहराय।
सोच सोच पग धरूं जतनसे, बार बार डिग जाय॥
ऊंचा नीचा महल पियाका म्हांसूं चढ़्यो न जाय।
पिया दूर पंथ म्हारो झीणो, सुरत झकोला खाय॥
कोस कोस पर पहरा बैठ्या, पैंड़ पैंड़ बटमार।
है बिधना, कैसी रच दीनी दूर बसायो म्हांरो गांव॥

मीरा के प्रभु गिरधर नागर सतगुरु दई बताय।
जुगन जुगन से बिछड़ी मीरा घर में लीनी लाय ॥८॥

शब्दार्थ : लपटीली=रपटीली। म्हांरौ=मेरा। झीणो=सूक्ष्म। सुरत=याद करने की शक्ति। झकोला=झोंका। पैंड़=डग। गाम=गांव।

टिप्पणी : 'कोस-कोस...म्हारौं गाम।' जीवन की यह गाड़ी कैसे आगे बढ़े! स्थान-स्थान पर विघ्न-बाधाएं रास्ता रोके खड़ी हैं, और पग-पग पर राहगीरों को लूटनेवाले ताक में बैठे हैं। मेरा असल गांव, लक्ष्य-स्थान, बहुत दूर है, कैसे वहां पर पहुंचा जाये! न जाने कितने जन्मों से उस स्वामी से बिछोह है। सतगुरु ही वहां तक हाथ पकड़कर पहुंचा सकता है।

यह पद निर्गुण उपासक सन्तों के घाट पर रचा गया मालूम देता है। कबीर साहब की शैली की याद यह पद दिला रहा है।

राग भांड

नातो नामको जी म्हांसूं तनक न तोड़्यो जाय ॥
पानां ज्यूं पीली पड़ी रे, लोग कहैं पिंड रोग।
छाने लांघण म्हैं किया रे, राम मिलण के जोग ॥
बाबल बैद बुलाइया रे, पकड़ दिखाई म्हांरी बांह।
मूरख बैद मरम नहि जाणे, कसक कलेजे मांह ॥
जा बैदां, घर आपणे रे, म्हांरो नांव न लेय।
मैं तो दाझी बिरहकी रे, तू काहेकूं दारू देय ॥
मांस गल गल छीजिया रे, करक रह्या गल आहि।
आंगलियां री मूदड़ी (म्हारे) आवण लागी बांहि ॥
रह रह पापी पपीहडा रे, पिवको नाम न लेय।
जै कोई बिरहण साम्हले तो, पिव कारण जिव देय ॥

खिण मंदिर खिण आँगणे रे, खिण खिण ठाढ़ी होय।
घायल ज्यूं घूमूं खड़ी, (म्हारी) बिथा न बूझै कोय॥
काढ़ कलेजो मैं धरूं रे, कागा तू ले जाय।
ज्यां देसां म्हारो पिव बसै रे, वे देखै तू खाय॥
म्हारे नातो नांवको रे, और न नातो कोय।
मीरा व्याकुल बिरहणी रे, (हरि) दरसण दीजो मोय॥९॥

शब्दार्थ : मोसूं=मुझको। पानां ज्यूं=पत्तों की भांति। पिंडरोग=पाण्डु रोग। इस रोग में रोगी बिल्कुल पीला पड़ जाता है। छाने=छिपकर। लांघण=लंघन, उपवास। बाबल=बाबा, पिता। करक=पीड़ा। दाझी=जली हुई। छीज्या=क्षीण हो गया। मूंदड़ो=मुंदरी, अंगूठी। बांहीं=भुजा। साम्हले=सुन पायेगी। खिण=क्षण भर। देसां=देशों में। खाई=खा लेना।

राग कामोद

आली रे, मेरे नैणां बाण पड़ी॥
चित्त चढ़ी मेरे माधुरी मूरत, उर बिच आन अड़ी।
कबकी ठाड़ी पंथ निहारूं, अपने भवन खड़ी॥
कैसे प्राण पिया बिनु राखूं, जीवनमूल जड़ी।
मीरा गिरधर हाथ बिकानी, लोग कहैं बिगड़ी॥१०॥

शब्दार्थ : नैणां=नयनों में, आंखों में। बाण=आदत। आन अड़ी=आकर अड़ गई अर्थात् समा गई। जीवनमूल=संजीवनी बूटी।

राग बिहाग

माई म्हारी हरिजी न बूझी बात।
पिंड मांसूं प्राण पापी निकस क्यूं नहीं जात॥

पट न खोल्या मुखां न बोल्या, सांझ भई परभात।
अबोलणा जुग बीतण लागो, तो काहे की कुशलात।।
सावण आवण होय रह्यो रे, नहिं आवण की बात।
रैण अंधेरी बीज चमंकै, तारा गिणत निसि जात।।
सुपन में हरि दरस दीन्हों, मैं न जान्यूं हरि जात।
नैण म्हारां उघण आया, रही मन पछतात।।
लेइ कटारी कंठ चीरूं, करूंगी अपघात।
मीरा व्याकुल बिरहणी रे, काल ज्यूं बिललात।।११।।

शब्दार्थ : बूझी बात=बात न पूछी, ध्यान न दिया। पिंड मासूं=शरीर में से। मुखां न बोल्या=मुंह से बात तक नहीं की। अबोलणा=बिना बोले, चुप साधे। सावण=सावन का महीना। बीज=बिजली। हरिजात=हरि आकर चले गये। ऊघण आया=ऊंघने लगा, झपकी आ गयी। बिललात=व्याकुल होना, चिल्लाना।

राग देश बिलंपत

दरस बिनु दूखण लागे नैन।
जबसे तुम बिछुड़े प्रभु मोरे, कबहुं न पायो चैन।।
सबद सुणत मेरी छतियां कांपै, मीठे लागै बैन।
बिरह कथा कांसूं कहूं सजनी, बह गई करवत ऐन।।
कल न परत पल हरि मग जोवत, भई छमासी रैन।
मीरा के प्रभु कब र मिलोगे, दुखमेटण सुखदैन।।१२।।

शब्दार्थ : सुणत=याद आते ही। बहगई करवत=जैसे आरी चल गई। मेटण=मेटनेवाले। दैण=देनेवाले।

राग धानी

सांवरा म्हारी प्रीत निभाज्यो जी ।।
थे छो म्हारा गुण रा सागर, औगण म्हारूं मति जाज्यो जी ।
लोकन धीजै (म्हारो) मन न पतीजै, मुखडारा सबद सुणाज्यो जी ।।
मैं तो दासी जनम जनम की, म्हारे आंगणा रमता आज्यो जी ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बेड़ो पार लगाज्यो जी ।।१३।।

शब्दार्थ : निभाज्यो=निभा लेना । थे छौ=तुम हो । औगण=अवगुण, दोष, भूलें । जाज्यो=जानना, मन में लाना । पतीजै=विश्वास करना । मुखडारा=मुख का । रमता आज्यो=विहार करते हुए आना ।

राग दरबारी

प्रभुजी थे कहां गया नेहड़ो लगाय ।
छोड़ गया बिस्वास संगाती प्रेमकी बाती बलाय ।।
बिरह समंद में छोड़ गया छो, नेहकी नाव चलाय ।
मीरा के प्रभु कब र मिलोगे, तुम बिन रह्यो न जाय ।।१४।।

शब्दार्थ : थे=तू । नेहड़ो=प्रेम । बाती बलाय=आग लगाकर । समंद=समुद्र । छो=हो । कब र=अरे, कब ।

राग सारंग

है मेरो मनमोहना, आयो नहीं सखी री ।।
कैं कहुं काज किया संतन का, कैं कहुं गैल भुलावना ।।
कहा करूं कित जाऊं मेरी सजनी, लाग्यो है बिरह सतावना ।।
मीरा दासी दरसण प्यासी, हरिचरणां चित लावना ।।१५।।

शब्दार्थ : काज=काम । गैल=रास्ता । लावना=लगाना है ।

राग बागेश्री

मैं बिरहणि बैठी जागूं जगत सब सोवै री आली ॥
बिरहणी बैठी रंगमहल में, मोतियन की लड़ पोवै।
इक बिरहणि हम ऐसी देखी, अंसुवन की माला पोवै ॥
तारा गिण गिण रैण बिहानी, सुख की घड़ी कब आवै।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, जब मोहि दरस दिखावै ॥१६॥

शब्दार्थ : बिरहणी=विरहनी। पोवै=गूंथती है। रैण=रात। बिहानी=बीत गयी।

राग दरबारी कान्हरा

पिय बिन सूनो छै जी म्हारो देस ॥
ऐसो है कोई पिवकूं मिलावै, तन मन करूं सब पेस।
तेरे कारण बन बन डोलूं, कर जोगण को भेस ॥
अवधि बदीती अजहूं न आए, पंडर हो गया केस।
मीरा के प्रभु कब र मिलोगे, तज दियो नगर नरेस ॥१७॥

शब्दार्थ : सूनो=सूना। छै=है। म्हारो देस=मेरा देश अर्थात् जीवन। पेस=समर्पण। बदीती=बीत गई। पंडर=सफेद। नगर नरेस=अपने राजा का राज्य।

राग कोसी कान्हरा

कोई कहियौ रे प्रभु आवन की, आवन की मनभावन की ॥
आप न आवै लिखि नहिं भेजै, बाण पड़ी ललचावन की।
ए दोउ नैण कह्यौ नहिं मानै, नदियां बहै जैसे सावन की ॥
कहा करूं कछु नहिं बस मेरो, पांख नहीं उड़ जावन की।
मीरा कहै प्रभु कब र मिलोगे, चेरी भई हूं तेरे दांवन की ॥१८॥

शब्दार्थ : कहियौ रे=आकर संदेशा दे। दांवन=दामन, कपड़े का पल्ला।

राग पूरिया कल्याण

साजन, सुध ज्यूं जाणो लीजै हो।
तुम बिन मोरे और न कोई, क्रिपा रावरी कीजै हो॥
दिन नहिं भूख रैण नहिं निंदरा, यूं तन पल पल छीजै हो।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, मिल बिछड़न मत कीजै हो॥१६॥

शब्दार्थ : साजन=प्रियतम। रावरी=तुम्हारी। निंदरा=नींद। बिछड़न=वियोग।

राग गौंड मलार

बादल देख डरी हो, स्याम, मैं बादल देख डरी॥
काली पीली घटा ऊमड़ी, बरस्यो एक घरी।
जित जाऊं तित पाणी पाणी, हुई हुई भोम हरी॥
जाका पिय परदेस बसत है, भीजूं बहार खरी।
मीरा के प्रभु हरि अविनासी कीजो प्रीत खरी॥२०॥

शब्दार्थ : भोम=भूमि, धरती। बहार खरी=बाहर खड़ी हुई। खरी=सच्ची।

राग सूरदासी मलार

बरसै बदरिया सावनकी, सावनकी मनभावनकी॥
सावन में उमग्यो मेरो मनवा, भनक सुनी हरि आवनकी।
उमड़ घुमड़ चहुं दिसिसे आयो, दामण दमकै झर लावनकी॥
नान्हीं-नान्हीं बूंदन मेहा बरसै, सीतल पवन सोहावनकी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आनंद मंगल गावनकी॥२१॥

शब्दार्थ : उमग्यो=उमंग में आ गया। भनक=धुन। दामन=दामिनी, बिजली। झर=झड़ी।

राग शुद्ध सारंग

हरि बिन ना सरै री माई।
मेरा प्राण निकस्या जात, हरी बिन ना सरै माई।
मीन दादुर बसत जल में, जल से उपजाई॥
तनक जल से बाहर कीना तुरत मर जाई।
कान लकरी बन परी काठ घुन खाई।
ले अगन प्रभु डार आये भसम हो जाई॥
बन बन ढूंढत मैं फिरी माई सुधि नहिं पाई।
एक बेर दरसण दीजे सब कसर मिटि जाई॥
पात ज्यों पीली पड़ी अरु बिपत तन छाई।
दासि मीरा लाल गिरधर मिल्या सुख छाई॥२२॥

शब्दार्थ : सरै=चलता है, पूरा होता है। दादुर=मेंढक। लकरी=लकड़ी। अगन=अग्नि, आग। पात=पत्ता। सुख छाई=आनन्द छा गया।

राग टोडी

आओ मगमोहना जी जोऊं थांरी बाट।
खान पान मोहि नैक न भावै नैणन लगे कपाट॥
तुम आयां बिन सुख नहिं मेरे दिल में बहोत उचाट।
मीरा कहै मैं भई रावरी, छांड़ो नांहि निराट॥२३॥

शब्दार्थ : जोऊं थारी बाट=तेरी राह देखती हूं। आयां बिनि=बिना आये। उचाट=बेचैनी। निराट=असहाय।

राग पीलू

राम मिलण के काज सखी, मेरे आरति उर में जागी री॥
तड़फत तड़फत कल न परत है, बिरहबाण उर लागी री।
निसदिन पंथ निहारूं पिव को, पलक न पल भरि लागी री॥

पीव पीव मैं रटूं रात दिन, दूजी सुध बुध भागी री।
बिरह भुजंग मेरो डस्यो है कलेजो, लहर हलाहल जागी री ॥
मेरी आरति मैंटि गोसाईं, आय मिलौ मोहि सागी री।
मीरा व्याकुल अति उकलाणी, पिया की उमंग अति लागी री ॥२४॥

शब्दार्थ : मिलण=मिलना। आरति=अत्यन्त पीड़ा। जागी=पैदा हुई। पलक न पलभरि=एक पल के लिए भी नींद नहीं आयी। भुजंग=सांप। लहर=लहरें। उकलाणी=व्याकुल हो गई। उमंग=चाह।

राग भीमपलासी

गोबिंद कबहुं मिलै पिया मेरा ॥
चरण कंवल को हंस हंस देखूं, राखूं नैणां नेरा।
निरखणकूं मोहि चाव घणेरो, कब देखूं मुख तेरा ॥
व्याकुल प्राण धरत नहिं धीरज, मिल तूं मीत सबेरा।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर ताप तपन बहुतेरा ॥२५॥

शब्दार्थ : नैणा नेरा=आंखों के निकट। चाव=चाह। घणेरो=बहुत अधिक। सवेरा=जल्दी ही।

राग भैरवी

मैं हरि बिन क्यों जिऊं री माइ ॥
पिव कारण बौरी भई, ज्यूं काठहि घुन खाइ ॥
ओखद मूल न संचरै, मोहि लाग्यो बौराइ ॥
कमठ दादुर बसत जल में जलहि ते उपजाइ।
मीन जल के बीछुरै तन तलफि करि मरि जाइ ॥
पिव ढूंढण बन बन गई, कहुं मुरली धुनि पाइ।
मीरा के प्रभु लाल गिरधर मिलि गये सुखदाइ ॥२६॥

शब्दार्थ : ओषद=औषधि, दवा। संचरै=अमर करे। कमठ=कछुवा। धुनिपाइ=आवाज सुनकर।

धुन लावनी

तुम्हरे कारण सब छोड़्या, अब मोहि क्यूं तरसावौ हौ।
बिरह-बिथा लागी उर अंतर, सो तुम आय बुझावौ हो॥
अब छोड़त नहिं बड़ै प्रभुजी, हंसकर तुरत बुलावौ हौ।
मीरा दासी जनम जनम की, अंग से अंग लगावौ हौ॥२७॥

शब्दार्थ : कारण=लिए, खातिर। छोड़त नहिं बड़ै=छोड़ने से काम नहीं चलेगा।

राग पीलू

करुणा सुणो स्याम मेरी, मैं तो होय रही चेरी तेरी॥
दरसण कारण भई बावरी बिरह-बिथा तन घेरी।
तेरे कारण जोगण हूंगी, दूंगी नग्र विच फेरी॥ कुंज बन हेरी-हेरी॥
अंग भभूत गले मृगछाला, यो तप भसम करूं री।
अजहुं न मिल्या राम अबिनासी बन-बन बीच फिरूं री॥ रोऊं नित टेरी-टेरी॥
जन मीरा कूं गिरधर मिलिया दुख मेटण सुख भेरी।
रूम रूम साता भइ उर में, मिट गई फेरा-फेरी॥ रहूं चरननि तर चेरी॥
॥२८॥

शब्दार्थ : बावरी=पगली। सुणी=सुनी। जोगण=योगिनी। नग्र बिच=नगर में। भभूत=भस्म, राख। यो तन=यह शरीर। टेरि-टेरि=पुकार-पुकारकर। सुख भरि=सुख देनेवाले। रूम रूम=रोम-रोम। साता=शान्ति। फेरा-फेरी=आना-जाना, जनम-मरण।

राग सावनी कल्याण

पपइया रे, पिव की बाणि न बोल।
सुणि पावेली बिरहुणी रे, थारी रालेली पांख मरोड़॥

चोंच कटाऊं पपइया रे, ऊपर कालोर लूण।
पिव मेरा मैं पीव की रे, तू पिव कहै स कूण।।
थारा सबद सुहावणा रे, जो पिव मेंला आज।
चोंच मंढाऊं थारी सोवनी रे, तूं मेरे सिरताज।।
प्रीतम कूं पतियां लिखूं रे, कागा तू ले जाय।
जाइ प्रीतम जासूं यूं कहै रे, थांरि बिरहस धान न खाय।।
मीरा दासी व्याकुली रे, पिव पिव करत बिहाय।
बेगि मिलो प्रभु अंतरजामी, तुम बिन रह्यौ न जाय।।२६।।

शब्दार्थ : पावेली=पायेगी । रालेली=तोड़ देगी । पांख=पंख । कालोर लूण=नमक डालूंगो । कूण=कौन । मेला=मिलन । सोवनी=सोने से । धान=अन्न ।

राग देस

पिया मोहि दरसण दीजै हो।
बेर बेर मैं टेरहूं, या किरपा कीजै हो।।
जेठ महीने जल बिना पंछी दुख होई हो।
मोर असाढ़ां कुरलहे घन चात्रा सोई हो।।
सावण में झड़ लागियो, सखि तीजां खेलै हो।
भादरवै नदियां बहै दूरी जिन मेलै हो।।
सीप स्वाति ही झलती आसोजां सोई हो।
देव काती में पूजहे मेरे तुम होई हो।।
मंगसर ठंड बहोती पड़ै मोहि बेगि सम्हालो हो।
पोस महीं पाला घणा, अबही तुम न्हालो हो।।
महा महीं बसंत पंचमी फागां सब गावै हो।
फागुण फागां खेलहैं बणराय जरावै हो।।
चैत चित्त में ऊपजी दरसण तुम दीजै हो।
बैसाख बणराइ फूलवै कोमल कुरलीजै हो।।

राग बरसाती

बंसीवारा आज्यो म्हारे देस, थारी सांवरी सूरत व्हालो बेस ।।
आऊं आऊं कर गया सांवरा, कर गया कौल अनेक ।
गिणता गिणता घस गई म्हारी आंगलियां की रेख ।।
मैं बैरागिण आदिकी जी, थांरे म्हारे कदको सनेस ।
बिन पाणी बिन साबुण सांवरा, होय गई धोय सफेद ।।
जोगण होय जंगल सब हेरूं, तेरा नाम न पाया भेष ।
तेरी सूरत के कारणे, म्हे धर लिया भगवां भेस ।।
मोर मुगट पीतांबर सोहै, घूंघरवाला केस ।
मीरा के प्रभु गिरधर मिलियां, दूनो बढ़ै सनेस ।।३४।।

शब्दार्थ : आज्यो=आना । म्हारे=मेरे । थारी–तुम्हारी । व्हालो=प्यारा । कौल=सौगंध । घस गई=घिस गई । आंगलियां=अंगुलियां । हेरूं=देखती फिरती हूं । म्हे=मैंने । सनेस=स्नेह, प्रेम ।

राग पीलू

साजन घर आओनी मीठा बोला ।।
कदकी ऊभी मैं पंथ निहारूं थारो, आयां होसी मेला ।।
आओ निसंक, संक मत मानो, आयां ही सुक्ख रहेला ।।
तन मन वार करूं न्यौछावर, दीज्यो स्याम मोय हेला ।।
आतुर बहुत बिलम मत कीज्यो, आयां हो रंग रहेला ।।
तुमरे कारण सब रंग त्याग्या, काजल तिलक तमोला ।।
तुम देख्यां बिन कल न पड़त है, कर धर रही कपोला ।।
मीरा दासी जनम जनम की, दिल की घुंडी खोला ।।३५।।

शब्दार्थ : ऊभी=खड़ी । आयां होसी मेला=आने से मिलन होगा । हेला=पुकार । रंग आनंद । तमोला=ताम्बूल, पान । कपोला=गाल पर । घुंडी=गांठ ।

राग प्रभावती

म्हारे जनम-मरण साथी थांने नहिं बिसरूं दिनराती ।।
थां देख्यां बिन कल न पड़त है, जाणत मेरी छाती ।
ऊंची चढ़-चढ़ पंथ निहारूं रोय रोय अंखियां राती ।।
यो संसार सकल जग झूठो, झूठा कुलरा न्याती ।
दोउ कर जोड्यां अरज करूं छूं सुण लीज्यो मेरी बाती ।।
यो मन मेरो बड़ो हरामी ज्यूं मदमाती हाथी ।
सतगुर हस्त धर्‌यो सिर ऊपर आंकुस दै समझाती ।।
पल पल पिवको रूप निहारूं, निरख निरख सुख पाती ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर हरिचरणां चित राती ।।३६।।

शब्दार्थ : थाने=तुमको । राती=लाल । जोड्यां=जोड़कर । हस्त=हाथ । राती=अनुराग ।

राग प्रभाती

थे तो पलक उघाड़ो दीनानाथ,
मैं हाजिर-नाजिर कद की खड़ी ।।
साजणियां दुसमण होय बैठ्या, सबने लगूं कड़ी ।
तुम बिन साजन कोई नहिं है, डिगी नाव मेरी समंद अड़ी ।।
दिन नहिं चैन रैण नहिं निदरा, सूखूं खड़ी खड़ी ।
बाण बिरह का लग्या हिये में, भूलूं न एक घड़ी ।।
पत्थर की तो अहिल्या तारी बन के बीच पड़ी ।
कहा बोझ मीरा में करिये सौ पर एक धड़ी ।।३७।।

शब्दार्थ : कड़ी=कड़वी । डिगी=डगमगा गई । समंद=समुद्र । निदरा=नींद । सौ पर एक धड़ी=कहां तो वजन सौ सेर का, और कहां पांच सेर का ।

राग दरबारी—ताल तिताला

तुम सुणौ दयाल म्हारी अरजी ।।
भवसागर में बही जात हौं, काढ़ो तो थारी मरजी।
इण संसार सगो र्नाहि कोई, सांचा सगा रघुबरजी ।।
मात पिता औ कुटुम कबीलो सब मतलब के गरजी।
मीरा की प्रभु अरजी सुण लो चरण लगाओ थारी मरजी ।।३८।।

शब्दार्थ : म्हारी=मेरी। काढ़ो=निकाढ़ लो, निकाल ले। इण=यह। गरजो=स्वार्थी। थारी=तुम्हारी।

राग बिहाग

स्याम मोरी बांहड़ली जी गहो।
या भवसागर मंझधार में थे ही निभावण हो ।।
म्हाने औगण घणा रहै प्रभुजी थे ही सहो तो सहो।
मीरा के प्रभु हरि अबिनासी लाज बिरद की बहो ।।३९।।

शब्दार्थ : थे=तुम। घणा छै=बहुत है। बहो=वहन करो, रखो।

दर्शनानन्द

राग पटमंजरी

मैं तो सांवरे के रंग राची।
साजि सिंगार बांधि पग घूंघरू, लोक-लाज तजि नाची ॥
गई कुमति, लई साधुकी संगति, भगत रूप भइ सांची।
गाय गाय हरि के गुण निसदिन, कालव्यालसूं बांची ॥
उण बिन सब जग खारो लागत, और बात सब कांची।
मीरा श्रीगिरधरन लालसूं, भगति रसीली जांची ॥१॥

शब्दार्थ : राची=रंग गई। उण=उस प्रियतम। खारो=कड़वा। रसीली=आनन्दमयी।

राग त्रिवेनी

(मेरे) नैना निपट बंकट छबि अटके ॥
देखत रूप मदनमोहनको पियत पियूख न मटके।
बारिज भवां अलक टेढ़ी मनौ अति सुगंधरस अटके ॥
टेढ़ी कटि टेढ़ी कर मुरली टेढ़ी पाग लर लटके।
मीरा प्रभु के रूप लुभानी गिरधर नागर नटके ॥२॥

शब्दार्थ : निपट=बिल्कुल। बंकट=टेढ़े, श्रीकृष्ण का एक नाम त्रिभंगी भी है अर्थात् तीन टेढ़ों से खड़े हुए बांके बिहारी। पियूख=पीयूष, अमृत। भटके=फिरे। भवां=भौंह। अटके=उलझ गये। लर=मोतियों की लड़ी पर। लटकें=लोभित हो गये। नटके=नटवर कृष्ण के।

राग गूजरी

या मोहन के रूप लुभानी।
सुंदर बदन कमलदल लोचन, बांकी चितवन मंद मुसकानी।।
जमना के नीरे तीरे धेनु चरावै, बंसी में गावै मीठी बानी।
तन मन धन गिरधर पर वारूं, चरणकंवल मीरा लपटानी।।३।।

शब्दार्थ : दल=पंखुड़ी। बांकी=टेढ़ी। नीरे=निकट।

राग पीलू

पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे।।
मैं तो मेरे नारायण की आपहि हो गइ दासी रे।
लोग कहैं मीरा भई बावरी न्यात कहै कुलनासी रे।।
विषका प्याला राणाजी भेज्या पीवत मीरा हांसी रे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर सहज मिले अबिनासी रे।।४।।

शब्दार्थ : आपहि=स्वयं ही। न्यात=सगे संबंधी। कुलनासी=कुल में दाग लगानेवाली। हांसी=प्रसन्न। सहज=आसानी से।

राग मांड़

माई री मैं तो लियो गोविंदो मोल।
कोई कहै छाने कोई कहै चौड़े, लियो री बजंता ढोल।।
कोई कहै मुंहघो, कोई कहै सुंहघो, लियो री तराजू तोल।
कोई कहै कालो, कोई कहै गोरो, लियो री अमोलक मोल।।
कोई कहै घर में, कोई कहै बन में, राधा के संग किलोल।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आवत प्रेम के मोल।।५।।

शब्दार्थ : माई=सखी। छाने=छिपकर। चौड़े=सबके सामने। बजंता ढोल=ढोल बजाकर, प्रकट होकर। मुंहघो=

महंगा। सुहँघो=सस्ता। अमोलक=अनमोल। आंखि खोल=ठीक तरह से देख-भालकर। किलोल=आनन्द, उल्लास।

राग तिलंग

मन रे परसि हरिके चरण ॥
सुभग सीतल कंवल कोमल, त्रिबिध ज्वाला हरण।
जिण चरण प्रह्लाद परसे, इंद्र पदवी धरण॥
जिण चरण ध्रुव अटल कीन्हें, राख अपनी सरण।
जिण चरण ब्रह्मांड भेट्यो, नखसिखां सिरी धरण॥
जिण चरण प्रभु परसि लीने, तरी गौतम घरण।
जिण चरण कालीनाग नाथ्यो, गोप लीला करण॥
जिण चरण गोवरधन धार्यो, गर्व मघवा हरण।
दासि मीरा लाल गिरधर, अगम तारण तरण॥६॥

शब्दार्थ : त्रिविध ज्वाला=तीन प्रकार के दुःख; आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक। जिण=जिन। अटल=अचल। भेट्यो=व्याप्त कर लिया। गौतम-घरण=गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या। मघवा=इन्द्र। अगम...तरण=अपार संसार-सागर से पार करानेवाले।

राग पीलू बरवा

बड़े घर ताली लागी रे, म्हारां मन री उणारथ भागी रे॥
छालरिये म्हांरो चित नहीं रे, डाबरिये कुण जाव।
गंगा जमना सूं काम नहीं रे, मैं तो जाय मिलूं दरियाव॥
हाल्यां मोल्यांसूं काम नहीं रे, सीख नहीं सिरदार।
कामदारासूं काम नहिं रे, मैं तो जाब करूं दरबार॥
काच कथीरसूं काम नहीं रे, लोहा चढ़े सिर भार।
सोना रूपासूं काम नहीं रे, म्हांरे हीरांरो बौपार॥

भाग हमारो जागियो रे, भयो समंद सूं सीर।
अम्रित प्याला छांडिके, कुण पीवे कड़वो नीर ॥
पीपाकूं प्रभु परचो दियो रे, दीन्हा खजाना पूर।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, धणी मिल्या छै हजूर ॥७॥

शब्दार्थ : ताली लागी=लगन लग गई। मन री=मन की। उणारथ=कामना। छीलरिये=छिछला गड्ढा। डाबरिये=डबरा, पानी से भरा हुआ गड्ढा। कुण=कौन। हाल्यां मोल्यां=नौकर-चाकर। कामदारां=अधिकारी। कथीर=रांगा। सीर=सम्बन्ध। जाब=जवाब, हाजिरी। कड़वो=खारा। रूपा=चांदी। पीपा=पीपा नाम का एक हरिभक्त। परिचौ=परिचय, चमत्कार। खजीन=खजाना। धणी=स्वामी।

राग झंझोटी

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई ॥
जाके सिर मोरमुगट मेरो पति सोई।
तात मात भ्रात बंधु आपनो न कोई ॥
छांड़ि दई कुलकी कानि कहा करिहै कोई।
संतन ढिग बैठि बैठि लोकलाज खोई ॥
चुनरीके किये टूक ओढ़ लीन्हीं लोई।
मोती मूंगे उतार बनमाला पोई ॥
अंसुवन जल सींचि-सींचि प्रेम-बेलि बोई।
अब तो बेल फैल गई आणंद फल होई ॥
दूधकी मथनियां बड़े प्रेमसे बिलोई।
माखन जब काढ़ि लियो छाछ पिये कोई ॥
भगति देखि राजी हुई जगत देखि रोई।
दासी मीरा लाल गिरधर तारो अब मोही ॥८॥

शब्दार्थ : कानि=मर्यादा, लोकलाज। अंसुवन जल= अश्रुरूपी जल से। आणद=आनन्दमय। फल=परिणाम। राजी=खुश। रोई=दुखी हुई।

राग अलैया

तोसों लाग्यो नेह रे प्यारे नागर नंदकुमार।
मुरली तेरी मन हर्यौ, बिसर्यौ घर ब्यौहार॥
जबतैं श्रवननि धुनि परी, घर अंगणा न सुहाय।
पारधि ज्यूं चूकै नहीं, म्रिगी बेधि दई आय॥
पानी पीर न जानई ज्यों, मीन तड़फ मरि जाय।
रसिक मधुपके मरमको नहीं, समुझत कमल सुभाय॥
दीपकको जो दया नहिं, उड़ि-उड़ि मरत पतंग।
मीरा प्रभु गिरधर मिले, जैसे पाणी मिलि गयौ रंग॥९॥

शब्दार्थ : बिसर्यो=भूल गया। पारधि=शिकारी। म्रिगी=हिरणी। बेधी दइ=बाण बेध दिया। पीर=पीड़ा।

राग सोरठ

जोसीडा ने लाख बधाई रे अब घर आये स्याम॥
आज आनंद उमंगि भयो है जीव लहै सुखधाम।
पांच सखी मिलि पीव परसिकैं आनंद ठामूं ठाम॥
बिसरि गयो दुख निरखि पियाकूं, सुफल मनोरथ काम।
मीराके सुखसागर स्वामी भवन गवन कियो राम॥१०॥

शब्दार्थ : जोसीडा=ज्योतिषी। पांच सखी=पांच ज्ञानेन्द्रियों से आशय है। ठां=जगह। सुफल पूरी हुई। राम= प्रियतम, स्वामी से आशय है।

राग परज

सहेलियां साजन घर आया हो।
बहोत दिनांकी जोवती बिरहणि पिव पाया हो ।।
रतन करूं नेवछावरी ले आरति साजूं हो।
पिवका दिया सनेसड़ा ताहि बहोत निवाजूं हो ।।
पांच सखी इकठी भई मिलि मंगल गावै हो।
पियाका रली बधावणा आणंद अंग न मावै हो ।।
हरि सागर सूं नेहरो नैणां बंध्या सनेह हो।
मीरा सखी के आंगणै दूधां बूठा मेह हो ।।११।।

शब्दार्थ : साजन=प्रियतम। जोवती=बाट देखती। सनेसडा=सन्देश। रली बधावनां=आनन्द बधाई। नेहरो=स्नेह। बंध्या=फंस गये। दूधां=दूध की धारों से। बूठा=बरसे।

राग बिलावल

पियाजी म्हारे नैणां आगे रहज्यो जी ।।
नैणां आगे रहज्यो म्हारे, भूल मत जाज्यो जी।
भौ-सागर में बही जात हूं, बेग म्हारी सुधि लीज्यो जी ।।
राणाजी भेज्या बिखका प्याला, सो इमरति कर दीज्यो जी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, मिल बिछुडन मत कीज्यो जी ।।१२।।

शब्दार्थ : नैणा=नयन, आंखें। बिख=विष, जहर। इमरित=अमृत।

राग कजरी

म्हारा ओलगिया घर आया जी।
तन की ताप मिटी सुख पाया, हिल मिल मंगल गाया जी ।।

घन की धुनि सुनि मोर मगन भया, यूं मेरे आनंद छाया जी।
मग्न भई मिल प्रभु अपणा सूं, भौका दरद मिटाया जी।।
चंद कूं निरखि कमोदणि फूलैं, हरषि भया मेरे काया जी।
रग रग सीतल भई मेरी सजनी, हरि मेरे महल सिधायाजी।।
सब भगतन का कारज कीन्हा, सोई प्रभु मैं पाया जी।
मीरा बिरहणि सीतल होई दुख दंद दूर नसाया जी।।१३।।

शब्दार्थ : ओलगिया=परदेसी, प्रियतम। घन की धुनि=बादल की गरज। भौ का दरद=संसारी दुःख। कमोदनि=कुमुदिनी। सिधाया=पधारा। दंद=द्वन्द्व, झगड़ा। नसाया=मेट दिया।

राग ललित

हमारो प्रणाम बांकेबिहारी को।
मोर मुकुट माथे तिलक बिराजे, कुंडल अलका कारी को।।
अधर मधुर पर बंसी बजावै रीझ रिझावै राधा प्यारी को।
यह छवि देख मगन भई मीरा, मोहन गिरधर-धारी को।।१४।।

शब्दार्थ : अलका कारी=काली अलकें। रिझावै=प्रसन्न करते हैं।

प्रेमालाप

राग सिंध भैरवी

म्हांरे घर होता जाज्यो राज।
अबके जिन टाला दे जाओ, सिर पर राखूं बिराज॥
म्हे तो जनम जनम की दासी, थे म्हांका सिरताज।
पावणडा म्हांके भलां ही पधार्‌या, सब ही सुधारण काज॥
म्हे तो बुरी छां थांके भली छै, घणोरी तुम हो एक रसराज।
थांने हम सब ही की चिंता, (तुम) सबके हो गरीबनिवाज॥
सबके मुगट सिरोमणि सिरपर, मानीं पुन्यकी पाज।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बांह गहेकी लाज॥१॥

शब्दार्थ : होता जाज्यो=होते हुए जाना। टाला=बहाना। म्हे=मैं। थे=तुम। म्हाका=मेरा। पावणडा=पाहुना। छां=हूं। घणेरी=बहुत। पाज=पुल, मर्यादा।

राग हमीर

आओ सहेल्हां रली करां है पर घर गवण निवारि॥
झूठा माणिक मोतिया री झूठी जगमग जोति।
झूठा सब आभूषण री, सांची पियाजी री प्रीति॥
झूठा पाट पटंबरा रे, झूठा दिखडणी चीर।
सांची पियाजी री गूदड़ी, जामें निरमल रहे सरीर॥
छपन भोग बुहाय देहे इण भोगन में दाग।
लूण अलूणो ही भलो है अपणे पियाजीरो साग॥

देखि बिराणे निवांणकूं है क्यूं उपजावे खीज।
कालर अपणो ही भलो है, जामें निपजै चीज।।
छैल बिराणो लाखको है अपणे काज न होय।
ताके संग सीधारतां है भला न कहसी कोय।।
बर हीणो अपणो भलो है कोढी कुष्टी कोय।
जाके संग सीधारतां है भला कहै सब लोय।।
अबिनासीसूं बालबा हे जिनसूं सांची प्रीत।
मीरा कूं प्रभुजी मिल्या है ए ही भगतिकी रीत।।२।।

शब्दार्थ : रली करां=आनन्द मनायें। गवण=जाना-आना। दिखणी=दक्षिणी, दक्षिण में बननेवाला एक कीमती वस्त्र। चीर=साड़ी। बुहाय देहे=बहा दो। दाग=दोष। अलूणो=बिना नमक का। बिराणे=पराये। निवांण=उपजाऊ जमीन। खीज=द्वेष। कांकर=कंकरीली जमीन। लाखको=लाखों का, अनमोल। हीणो=हीन। लोह=लोग। बालवा=बालम, प्रियतम।

राग प्रभाती

जागो म्हांरा जगपतिरायक हंस बोलो क्यूं नहीं।।
हरि छो जी हिरदा मांहि पट खोलो क्यूं नहीं।।
तन मन सुरति संजोइ सीस चरणां धरूं।
जहां जहां देखूं म्हारो राम तहां सेवा करूं।।
सदकै करूं जी सरीर जुगै जुग वारणैं।
छोड़ी छोड़ी कुलकी लाज स्याम थांरे कारणैं।।
थोड़ी थोड़ी लिखूं सिलाम बहोत करि जानज्यौ।
बंदी हूं खानाजाद महरि करि मानज्यौ।।
हां हो म्हारा नाथ सुनाथ बिलम नहिं कीजिये।
मीरा चरणां की दासि दरस फिर दीजिये।।३।।

शब्दार्थ : छो=हो। सदकै=न्योछावर। वारणै=

न्योछावर कर दूं। सिलाम=सलाम। बन्दी=दासी। खाना-जाद=जन्म से ही घर में पली हुई। महरि=मेहर, कृपा। मानज्यौ=मान लेना।

राग हमीर

हरी मेरे जीवन प्रान अधार।
और आसरो नाहीं तुम बिन तीनूं लोक मंझार।।
आप बिना मोहि कछु न सुहावै निरख्यौ सब संसार।
मीरा कहै मैं दासि रावरी दीज्यो मती बिसार।।४।।

शब्दार्थ : आसरो=सहारा। मंझार=में। रावरी=तुम्हारी।

राग मांड

स्याम, मने चाकर राखो जी। गिरधारीलाल, चाकर राखो जी।।
चाकर रहसूं बाग लगासूं, नित उठ दरसण पासूं।
बिंद्राबन की कुंज गलिन में तेरी लीला गासूं।।
चाकरी में दरसण पाऊं, सुमिरण पाऊं खरची।
भाव भगति जागीरी पाऊं, तीनूं बातां सरसी।।
मोर मुगट पीतांबर सोहे, गल बैजंती माला।
बिंद्राबन में धेनु चरावे, मोहन मुरलीवाला।।
हरे हरे नित बाग लगाऊं, बिच बिच राखूं क्यारी।
सांवरियाके दरसण पाऊं, पहर कुसुम्मी सारी।।
जोगी आया जोग करणकूं, तप करणे संन्यासी।
हरी भजनकूं साधू आया, बिंद्राबनके बासी।।
मीराके प्रभु गहिर गंभीरा सदा रहो जी धीरा।
आधी रात प्रभु दरसन दीन्हें, प्रेम नदी के तीरा।।५।।

शब्दार्थ : मने=मुझको। लगासूं=लगाऊंगी। गासूं=गुण

गाऊंगी। खरची=रोज के लिए खर्चा। सरसी=अच्छी से अच्छी। गहिरगंभीरा=शान्त स्वभाव के। रहो धीरा=विश्वास रखो। तीरा=किनारा, क्षेत्र।

टिप्पणी : जिस दशा का वर्णन इस पद में किया गया है, उससे उत्तम आत्म-समर्पण की भावना और क्या हो सकती है?

राग हंस नारायण

आली, सांवरे की दृष्टि मानो, प्रेम की कटारी है॥
लागत बेहाल भई, तनकी सुध बुध गई,
तन मन सब व्यापो प्रेम, मानो मतवारी है॥
सखियां मिल दोय चारी, बावरी सी भई न्यारी,
हौं तो वाको नीके जानौं, कुंजको बिहारी॥
चंदको चकोर चाहै, दीपक पतंग दाहै,
जल बिना मीन जैसे, तैसे प्रीत प्यारी है॥
बिनती करूं हे स्याम, लागूं मैं तुम्हारे पांव,
मीरा प्रभु ऐसी जानो, दासी तुम्हारी है॥६॥

शब्दार्थ : आली=सखी। मतवारी=मतवाली। बावरी=पगली। न्यारी=निराली। दाहे=जला देता है।

राग तिलक कामोद

छोड़ मत जाज्यो जी महाराज॥
मैं अबला बल नांय गुसाईं, तुमही मेरे सिरताज।
मैं गुणहीन गुण नांय गुसाईं, तुम समरथ महाराज॥
थांरी होयके किणरे जाऊं, तुमही हिबडारो साज।
मीरा के प्रभु और न कोई राखो अबके लाज॥७॥

शब्दार्थ : नांय=नहीं। थांरी=तुम्हारी। किणरे=किसकी। हिबडारो=हृदय के।

निश्चय

राग खम्माच

नहिं भावै थांरो देसड़लो जी रंगरूड़ो ॥
थांरा देसा में राणा साध नहीं छै, लोग बसे सब कूड़ो ।
गहणा गांठी राणा हम सब त्यागा, त्याग्यो कररो चूड़ो ॥
काजल टीकी हम सब त्याग्या, त्याग्यो है बांधन जूड़ो ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर बर पायो छै रूड़ो ॥१॥

शब्दार्थ : थांरो=तुम्हारा । देसलडो=देश । रंग रूड़ो=विचित्र । साध=साधु सन्त । कूड़ो=निकम्मा । कररो=हाथ का । टीकी=बिन्दी । जूड़ो=जूड़ा, वेणी । रूड़ो=सुंदर ।

राग गुनकली

मैं गिरधर के घर जाऊं ॥
गिरधर म्हांरो सांचो प्रीतम देखत रूप लुभाऊं ॥
रैण पड़े तबही उठ जाऊं, भोर भये उठ आऊं ।
रैण दिना वाके संग खेलूं ज्यूं त्यूं ताहि रिझाऊं ॥
जो पहिरावै सोई पहिरूं, जो दे सोई खाऊं ।
मेरी उणकी प्रीति पुराणी, उण बिन पल न रहाऊं ॥
जहँ बैठावें तितही बैठूं, बेचै तो बिक जाऊं ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर बार बार बलि जाऊं ॥२॥

शब्दार्थ : रैण=रात्रि । भोर=प्रातः काल । ज्यूं त्यूं=जैसे तैसे, सब प्रकार से । उण=उन । बलि जाऊं=न्योछावर होती हूं ।

राग पीलू

तेरो कोई नहिं रोकणहार, मगन होइ मीरां चली ॥
लाज सरम कुलकी मरजादा सिरसें दूर करी ।
मान अपमान दोऊ धर पटके, निकसी ग्यान गली ॥
ऊंची अटरिया लाल किवडिया, निरगुण सेज बिछी ।
पंचरंगी झालर सुभ सोहै फूलन बूल कली ॥
बाजूबंद कडूला सोहे, सिंदूर मांग भरी ।
सुमिरण थाल हाथ में लीन्हों, सोभा अधिक खरी ॥
सेज सुखमणा मीरा सोहै, सुभ है आज घरी ।
तुम जाओ राणा घर आपणे, मेरी थांरी नाहिं सरी ॥३॥

शब्दार्थ : सरम=शर्म । धर पटके=परवा नहीं की । गली=मार्ग । किवडिया=किवाड़, द्वार । बाजूबंद=बांह पर पहनने का गहना । कडोला=कड़ा, हाथ पर पहनने का गहना । खरी=अच्छी । सेज सुखमणा=सुषुम्ना नाड़ी से समाधि लगा-कर । सरी=बन गई ।

टिप्पणी : श्री परशुराम चतुर्वेदी ने मीराबाई की पदावली में इस पद पर इस प्रकार विशेष प्रकाश डाला है :

"सुषुम्ना वा ब्रह्मनाड़ी की सहायता से साधना कर सहज समाधि में परमात्मलीन होने की अवस्था का वर्णन मीरा ने,यहां पर, शृंगारों से सज्जित नायिका के प्रियतम-संयोग के रूपक द्वारा किया है। गहनों के नामादि का साधना सम्बन्धी विवरणों के साथ मिलना स्पष्ट नहीं है।"

नम्र निवेदन है कि कान्ताभाव की भक्ति का ज्ञान-मार्ग के साथ यहां समन्वय किया गया है ।

राग पहाड़ी

सीसोद्यो रूठ्यो तो म्हांरो कांई कर लेसी।
म्हे तो गुण गोविन्द का गास्यां हो माई ॥
राणोजी रूठ्यो वांरो देस रखासी,
हरि रूठ्यां किठे जास्यां हो माई ॥
लोक लाजकी काण न मानां,
निरभै निसाण घुरास्यां हो माई ॥
राम नामकी झाझ चलास्यां,
भौ-सागर तर जास्यां हो माई ॥
मीरा सरण सांवल गिरधर की,
चरण कंवल लपटास्यां हो माई ॥४॥

शब्दार्थ : सीसोद्यो=शीशोदिया, आशय है यहां राणा भोजराज से, जो मेवाड़ के महाराणा सांगा के ज्येष्ठ राजकुमार थे, इन्हीं के साथ मीराबाई का विवाह हुआ था। रूठ्यौ=रूठ गया। कांई कर लेसी=क्या कर लेगा, क्या बिगाड़ लेगा। म्हे=मैं। गास्यां=गाऊंगी। माई=सखी। किठे=कहां। काण=मर्यादा। निसाण=नगाड़ा। घुरस्यां=बजावेगी। झाझ=जहाज़।

राग कामोद

बरजी मैं काहूकी नाँहि रहूं।
सुणो री सखी तुम चेतन होयकै मनकी बात कहूं ॥
साध संगति कर हरि सुख लेऊं जगसूं दूर रहूं।
तन धन मेरो सबही जावो भल मेरो सीस लहूं ॥
मन मेरो लागो सुमरण सेती सबका मैं बोल सहूं।
मीरा के प्रभु हरि अबिनासी सतगुर सरण गहूं ॥५॥

शब्दार्थ : बरजि=मना करने पर। भलि=चाहे। सीस लहूं=सिर कटा दूं। बोल=अपमान का वचन, निन्दा। गहूं=पकड़ती हूं।

राग पीलू

राणाजी, म्हांरी प्रीति पुरबली मैं कांई करूं॥
राम नाम बिन नहीं आवड़े, हिवड़ो झोला खाय।
भोजनिया नहिं भावे म्हांने, नींदडलीं नहिं आय॥
विष को प्यालो भेजियो जी, 'जाओ मीरा पास',
कर चरणामृत पी गई, म्हारे गोविंद रे बिसवास॥
बिषको प्यालो पीं गई जीं, भजन करो राठौर,
थांरी मीरा ना मरूं, म्हारो राखणवालो और॥
छापा तिलक लगाइया जीं, मन में निश्चै धार,
रामजी काज संवारियाजीं, म्हांनै भावै गरदन मार॥
पेट्यां बासक भेजियो जीं, यो छै मोतींडारो हार,
नाग गले में पहिरियो, म्हारे महलां भयो उजियार॥
राठोडांरीं धीयड़ी दी, सींसाद्यो रे साथ।
ले जाती बैंकुंठकूं म्हांरा नेक न मानी बात॥
मीरा दासी स्याम की जी, स्याम गरीबनिवाज।
जन मीरा की राखज्यो कोइ, बांह गहेकी लाज॥६॥

शब्दार्थ : पुरबली=पूर्व जन्म की। कांई=क्या। आवड़े=रहता, चैन पड़ती। झोला खाय=उथल-पुथल होता है। हेवड़ो=हृदय। भावै=चाहे। पेट्यां=पेटी के भीतर। बासक=बासुकी, सांप। धियड़ी=पुत्री। राखज्यौ=रखियेगा।

राग खंभावती

राम नाम मेरे मन बसियो, रसियो राम रिझाऊं ए माय।
मैं मंदभागण परम अभागण, कीरत कैसे गाऊं ए माय॥

बिरह पिंजरकी बाड़ सखी री, उठकर जी हुलसाऊं ए माय।
मनकूं मार सजूं सतगुरसूं, दुरमत दूर गमाऊं ए माय॥
डंको नाम सुरतकी डोरी, कड़ियां प्रेम चढ़ाऊं ए माय।
प्रेम को ढोल बन्यो अति भारी, मगन होय गुण गाऊं ए माय॥
तन करूं ताल मन करूं ढफली, सोती सुरति जगाऊं ए माय।
निरत करूं मैं प्रीतम आगे, तो प्रीतम पद पाऊं ए माय॥
मो अबलापर किरपा कीज्यौ, गुण गोबिंदका गाऊं ए माय।
मीराके प्रभु गिरधर नागर, रज चरणनकी पाऊं ए माय॥७॥

शब्दार्थ : हुलसाऊं=मन बहलाऊंगी। गमाऊं=गवां दूं, खो दूं। डाको=डंका। कड़ियां=ढोल की डोरियां। मोरचंग=मुंहचंग, मुंह से बजाने का एक बाजा। रज=धूल।

राग अगना

राणाजी, थे क्यांने राखो म्हांसूं बैर।
थे तो राणाजी म्हांने इसड़ा लागो, ज्यूं बृच्छन में कैर।
महल अटारी हम सब त्याग्या, त्याग्यो थारो बसनो सैर॥
काजल टीकी राणा हम सब त्याग्या, भगती-चादर पैर।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर इमरित कर दियो झैर॥८॥

शब्दार्थ : क्यां ने=किसलिए। म्हासूं=मुझसे। इसड़ा=ऐसे। कैर=करील। सैर=शहर। पैर=पहनकर। इमरित=अमृत। झैर=जहर।

राग पूरिया कल्यान

राणाजी, म्हे तो गोविंद का गुण गास्यां।
चरणामृत को नेम हमारे, नित उठ दरसण जास्यां॥
हरि मंदर में निरत करास्यां, घूंघरियां धमकास्यां।
राम नाम का झाझ चलास्यां भवसागर तर जास्यां॥

यह संसार बाड़ का कांटा ज्या संगत नहिं जास्यां।
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर निरख परख गुण गास्यां ।।६।।

शब्दार्थ : गास्यां=गाऊंगी। दरसण जास्यां=दर्शन करने जाऊंगी। निरत=नृत्य। झाझ=जहाज। ज्या=जिस।

राग वृन्दावनी

आली, म्हांने लागै बृन्दाबन नीको।
घर घर तुलसी ठाकुर पूजा दरसण गोविंदजी को।।
निरमल नीर बहत जमुना में, भोजन दूध दही को।
रतन सिंघासन आप बिराजैं, मुगट धर्‍यो तुलसी को।।
कुंजन कुंजन फिरति राधिका, सबद सुनन मुरली को।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, भजन बिना नर फीको।।१०।।

शब्दार्थ : म्हांने=मुझे। मुगट=मुकुट। फीको=नीरस, व्यर्थ।

प्रेम

राग मधुमाध सारंग

या ब्रज में कछु देख्यो री टोना ।।
लै मटकी सिर चली गुजरिया, आगे मिले बाबा नंदजी के छोना ।
दधिको नाम बिसरि गयो प्यारी, लेलेहु री कोउ स्याम सलोना ।।
बिंद्राबनकी कुंज गलिन में, आंख लगाय गयो मनमोहना ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सुंदर स्याम सुघर रसलौना ।।१।।

शब्दार्थ : टोना=जादू। गुजरिया=ग्वालिन। छोना=छोटा लड़का। लेलेहु री कोउ स्याम सलोना=प्रेमरस में आतुर होकर ग्वालिन भूल गई कि मेरी मटकी का दही ले लो, वह कहती है, स्यामसुन्दर को ले लो। सलोना=सुन्दर। आंख लगाय=प्रीति जोड़कर। रसलोना=सलोने रसवाला।

राग सूहा

चालो मन गंगा जमुना तीर ।
गंगा जमुना निरमल पाणी सीतल होत सरीर ।
बंसी बजावत गावत कान्हो, संग लियो बलबीर ।।
मोर मुगट पीताम्बर सोहे कुण्डल झलकत हीर ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर चरर्ण कंवल पर सीर ।।२।।

शब्दार्थ : कान्हो=कन्हैया। बलबीर=कृष्ण के बड़े भाई बलराम। झलकत=जगमगाते हैं। सीर=सिर।

राग धानी

मैं गिरधर रंग-राती, सैयां मैं० ॥
पचरंग चोला पहर सखी री, मैं झिरमिट रमवा जाती ।
झिरमिटमां मोहि मोहन मिलियो, खोल मिली तन गाती ॥
कोईके पिया परदेस बसत हैं, लिख लिख भेजें पाती ।
मेरा पिया मेरे हीय बसत है, ना कहुं आती जाती ॥
चंदा जायगा सूरज जायगा, जायगी धरण अकासी ।
पवन पाणी दोनूं ही जायंगे, अटल रहे अबिनासी ॥
और सखी मद पी-पी माती, मैं बिन पियां ही माती ।
प्रेमभठी को मैं मद पीयो, छकी फिरूं दिनराती ॥
सुरत निरत को दिवलो जोयो, मनसाकी कर ली बाती ।
अगम घाणि को तेल सिंचायो, बाल रही दिनराती ॥
जाऊंनी पीहरिये जाऊंनी सासरिये, हरिसूं सैन लगाती ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर, हरिचरणां चित लाती ॥३॥

शब्दार्थ : रंग राती=प्रेम में रंगी हुई। पचरंग=आशय है पंच तत्वों से बना हुआ शरीर। चोला=ढीला ढाला कुर्ता; यहां भी आशय है शरीर से । झिरमिट=श्री परशुराम चतुर्वेदी ने इस शब्द का अर्थ करते हुए लिखा है, "झुरमुट मारने का खेल, जिसमें सारा शरीर इस प्रकार ढक लिया जाता है कि कोई जल्दी पहचान नहीं सके, अर्थात् कर्मानुसार जीवात्मा की योनि का शरीरावरण-धारण।" गाती=शरीर पर बंधी हुई चादर, श्री परशुराम चतुर्वेदी ने 'गाती' का अर्थ "मनोराज द्वारा निर्मित काल्पनिक खोल मिली=आवरण हटाकर तन्मय हो गई ।" धरण=धरती । और सखी=अन्य जीवात्माएं । माती=मतवाली। बिन पियां=बिना पिये ही। सुरत=परमेश्वर की स्मृति। निरत=विषयों से विरक्ति। संजोले=सजा

ले। भठी=भट्टी शराब बनाने की। सैन=संकेत।

टिप्पणी : इस पद में निराकार, निर्गुण ब्रह्म से भक्तियोग के द्वारा साक्षात्कार का स्पष्ट मार्ग दिखाया गया है, जो रहस्य का मार्ग है।

राग होरी सिन्दूरा

फागुन के दिन चार होली खेल मना रे ।।
बिन करताल पखावज बाजै अणहदकी झणकार रे।
बिन सुर राग छतीसूं गावै रोम रोम रणकार रे।।
सील संतोखकी केसर घोली प्रेम प्रीत पिचकार रे।
उड़त गुलाल लाल भयो अंबर, बरसत रंग अपार रे।।
घटके सब पट खोल दिये हैं लोकलाज सब डार रे।
मीराके प्रभु गिरधर नागर चरणकंवल बलिहार रे।।४।।

शब्दार्थ : अणहद=अन्तरात्मा का अनाहत शब्द। सुर=स्वर। सार=उत्तम। अम्बर=आकाश।

टिप्पणी : इस पद में होली के व्याज से सहज समाधि का चित्र खेंचा गया है और ऐसी समाधि का साधन प्रेमपराभक्ति को बताया गया है।

राग जौनपुरी

सखी री लाज बैरण भई।
श्रीलाल गोपालके संग काहें नाहिं गई।।
कठिन क्रूर अक्रूर आयो साज रथ कहं नई।
रथ चढ़ाय गोपाल ले गयो हाथ मींजत रही।।
कठिन छाती स्याम बिछड़त बिरहतें तन तई।
दासि मीरा लाल गिरधर बिखर क्यूं ना गई।।५।।

शब्दार्थ : बैरण=बैरिन, बाधा पहुंचानेवाली। नई=रथ जोतकर। तन तई=देह जल गई।

राग गूजरी

कुण बांचे पाती, बिना प्रभु कुण बांचे पाती।
कागद ले ऊधोजी आयो, कहां रह्या साथी।
आवत जावत पांव घिस्या रे (बाला) अंखिया भई राती॥
कागद ले राधा बांचण बैठी, (बाला) भर आई छाती।
नैण नीरज में अम्ब बहे रे (बाला) गंगा बहि जाती॥
पाना ज्यूं पीली पड़ी रे (बाला) धान नहीं खाती।
हरि बिन जिवणो यूं जलै रे (बाला) ज्यूं दीपक संग बाती॥
मने भरोसो रामको रे (बाला) डूब तिर्‌यो हाथी।
दासि मीरा लाल गिरधर, सांकडारो साथी॥६॥

शब्दार्थ : कुण=कौन। पाती=चिट्ठी। साथी=सखा, श्रीकृष्ण से आशय है। घिस्या=घिस गये। राती=रोते-रोते लाल हो गई। अम्ब=पानी। म्हने=मुझे। सांकडारो=संकट में अपने भक्तों का सहायक।

राग खम्माच

मीरा मगन भई हरिके गुण गाय॥
सांप पिटारा राणा भेज्या, मीरा हाथ दिया जाय।
न्हाय धोय जब देखन लागी, सालिगराम गई पाय॥
जहरका प्याला राणा भेज्या, इम्रत दिया बनाय।
न्हाय धोय जब पीवन लागी, हो गई अमर अंचाय॥
सूली सेज राणा ने भेजी, दीज्यो मीरा सुवाय।
सांझ भई मीरा सोवण लागी, मानो फूल बिछाय॥
मीरा के प्रभु सदा सहाई, राखे बिघन हटाय।
भजन भाव में मस्त डोलती, गिरधर पर बलि जाय॥७॥

शब्दार्थ : इम्रत=अमृत। अंचाय=पीकर। बलि जाय=न्योछावर होती है।

सिखावन

राग झंझोटी

भज ले रे मन, गोपाल-गुना ।।
अधम तरे अधिकार भजनसूं, जोइ आये हरि-सरना ।
अबिसवास तो साखि बताऊं, अजामील गणिका सदना ।।
जो कृपाल तन मन धन दीन्हौं, नैन नासिका मुख रसना ।
जाको रचत मास दस लागै, ताहि न सुमिरो एक छिना ।।
बालापन सब खेल गमायो, तरुण भयो जब रूप घना ।
वृद्ध भयो जब आलस उपज्यो, माया-मोह भयो मगना ।।
गज अरु गीधहु तरे भजनसूं कोउ तर्यो नहिं भजन बिना ।
धना भगत पीपामुनि सिवरी, मीराकीहू करो गणना ।।१।।

शब्दार्थ : गुनां=गुणों का । साखी=साक्षी, प्रमाण सदना=भक्त सदन, कसाई । रसना=जीभ । छिना=क्षण । घना=बड़ा, बहुत । गीध=जटायु से तात्पर्य है । धना=एक हरिभक्त । सिवरी=शबरी भीलनी ।

राग रागश्री

राम-नाम-रस पीजै, मनुआं राम-नाम-रस पीजै ।
तज कुसंग सत्संग बैठ नित हरि-चर्चा सुनि लीजै ।।
काम क्रोध मद लोभ मोहकूं बहा चित्तसें दीजै ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, ताहिके रंग में भीजै ।।२।।

शब्दार्थ : बहा दीजै=हटा देना चाहिए । रंग में भीजै= प्रेमरस में भीग जाना चाहिए ।

राग शुद्ध सारंग

चालो अगमके देस काल देखत डरै।
वहां भरा प्रेम का हौज हंस केल्यां करै॥
ओढ़ण लज्जा चीर धीरज कों घांघरो।
छिमता कांकण हाथ सुमत को मूंदरो॥
दिल दुलड़ी दरियाव सांचको दोवडो।
उबटण गुरुको ग्यान ध्यान को धोवणो॥
कान अखोटा ग्यान जुगतको झोंटणो।
बेसर हरिको नाम चूड़ो चित ऊजणो॥
पूंची है बिसवास काजल है धरमकी।
दातां इम्रत रेख दयाको बोलणो॥
जौहर सील संतोष निरतको घूंघरो।
बिंदली गज और हार तिलक हरि-प्रेम रो॥
सज सोला सिणगार पहरि सोने राखड़ीं।
सांवलियांसूं प्रीति औरासूं आखड़ी॥
पतिबरता की सेज प्रभुजी पधारिया।
गावै मीराबाई दासि कर राखिया॥३॥

शब्दार्थ : अगम=जहां पहुंच न हो, परमात्मा का पद। हंस=जीवात्मा से आशय है। केल्यां=क्रीड़ाएं। छिमता=क्षमा। दुलड़ी=दो लडोंवाली माला। दोबड़ो=गले में पहनने का गहना। अखोटा=कान का गहना। झोटणों=कान का एक गहना। बेसर=नाक का एक गहना। ऊजणो=शुद्ध। जैहर=एक आभूषण। बिंदली=टिकुली। गज=गजमोतियों की माला। आखडी=टूट गई। राखडी=चूड़ामणि।

टिप्पणी : परमात्मारूपी स्वामी से तदाकार होने के लिए मीराबाई ने इस पद में विविध शृंगारों का रूपक बांधा है, भिन्न-भिन्न साधनों का।

राग हमीर

नहिं एसो जनम बारंबार।।
का जानूं कछु पुन्य प्रगटे मानुसा-अवतार।
बढ़त छिन-छिन घटत पल-पल जात न लागे बार।।
बिरछके ज्यूं पात टूटे, लगें नहिं पुनि डार।
भौसागर अति जोर कहिये अनंत ऊंड़ी धार।।
रामनाम का बांध बेड़ा उतर परले पार।
ज्ञान चोसर मंडा चोहटे सुरत पासा सार।।
साधु संत महंत ग्यानी करत चलत पुकार।
दासि मीरा लाल गिरधर जीवणा दिन च्यार।।४।।

शब्दार्थ : अवतार=जनम। ऊंड़ी=गहरी। चौसर=चौपड़ का खेल। च्यार=चार।

राग बिहागरा

रमइया बिन यो जिवडो दुख पावै। कहो कुण धीर बंधावै।।
यो संसार कुबुधि को भांडो, साध संगत नहीं भावै।
राम-नाम की निंद्या ठाणै, करम ही करम कुमावै।।
राम-नाम बिन मुकति न पावै, फिर चौरासी जावै।
साध संगत में कबहुं न जावै, मूरख जनम गुमावै।।
मीरा प्रभु गिरधर के सरणै, जीव परमपद पावै।।५।।

शब्दार्थ : जिवड़ो=जीव। कुबुधि=दुर्बुद्धि। भांडो=बर्तन। कुमावै=कमाता है। चौरासी=चौरासी लाख योनियां।

राग बिलावल

लेतां लेतां रामनाम रे, लोकड़ियां तो लाजो मरै छे।
हरि मंदिर जातां पांवड़िया रे दूखै, फिर आवै आखो गाम रे।
झगड़ो धाय त्यां दौड़ीने जाय रे, मूकीने घर ना काम रे।।

भांड भवैया गणिकात्रित करतां बैसी रहे चारे जाम रे।
मीरा ना प्रभु गिरधर नागर चरण कंवल चित हाय रे।।६।।

शब्दार्थ : लोकड़ियां=लोग। लाजां मरे छे=शर्म के मारे मरते हैं। पांवड़ियां=पैर। आखो=सारा। धाय=हो रहा हो। त्यां=तहां। मूकीने=छोड़कर। भवैया=नाचने-वाले। बैसी रहे=बैठा रहता है।

टिप्पणी : यह पद गुजराती भाषा में रचा गया है।

नाम

राग धनाश्री

मेरो मन रामहि राम रटै रे।
राम नाम जप लीजे प्राणी, कोटिक पाप कटै रे।
जनम जनमके खत जु पुराने, नामहि लेत फटै रे।।
कनक कटोरे इम्रत भरियो, पीवत कौन नटै रे।
मीरा कहे प्रभु हरि अबिनासी, तन मन ताहि पटै रे।।१।।

शब्दार्थ : खत=कर्ज के कागज, यहां आशय है पाप-कर्म का लेखा। फटै=चुक जाते हैं। नटै=इन्कार करता है। पटै=मिल जाते हैं।

राग श्रीरंजनी

पायो जी म्हे तो राम रतन धन पायो।
बस्तु अमोलक दी म्हारे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।।
जनम जनमकी पूंजी पाई, जगमें सभी खोवायो।
खरचै नहि कोइ चोर न लेवै, दिन-दिन बढ़त सवायो।।
सतकी नाव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।
मीराके प्रभु गिरधर नागर, हरष हरष जस गायो।।२।।

शब्दार्थ : म्हे=मैंने। पूंजी=मूल धन। खोवायो=खो दिया, त्याग दिया। खेवटिया=मल्लाह। जस=गुण-कीर्तन।

गुरु-महिमा

राग मलार

लागी मोहिं नाम-खुमारी हो ॥
रिमझिम बरसै मेहड़ा भीजै तन सारी हो।
चहुंदिस दमकै दामणी गरजै घन भारी हो॥
सतगुर भेद बताया खोली भरम-किंवारी हो।
सब घट दीसै आतमा सबहीसूं न्यारी हो॥
दीपग जोऊं ग्यानका चढ़ूं अगम अटारी हो।
मीरा दासी रामकी इमरत बलिहारी हो ॥३॥

शब्दार्थ : खुमारी=थकावट, हल्का नशा। मेहड़ा=मेघ, आशय प्रेम की भावना से है। सारी=सारा अंग अथवा साड़ी। भरम-किंवारी=भ्रान्तिरूपी किवाड़। दीपग=दीपक। जोऊं=जलाती हूं। अटारी=ऊंचा स्थान, परमपद से आशय है। इमरत=अमृत।

राग धानी

री, मेरे पार निकस गया सतगुर मार्‌या तीर।
बिरह-भाल लगी उर अंदर, व्याकुल भया सरीर॥
इत उत चित्त चलै नहिं कबहूं, डारी प्रेम-जंजीर।
कै जाणै मेरो प्रीतम प्यारो, और न जाणै पीर॥
कहा करूं मेरो बस नहिं सजनी, नैन झरत दोउ नीर।
मीरा कहै प्रभु तुम मिलियां बिन प्राण धरत नहिं धीर ॥४॥

शब्दार्थ : री=अरी सखी । पार=आरपार । तीर=मार्‌या=रहस्य के शब्द द्वारा इशारे से बता दिया। चले नहिं=विचलित नहीं होता है। डारी=डाल दी। नीर=जल, आंसुओं से तात्पर्य है।

राग धानी

मोहि लागी लगन गुरुचरणन की ।
चरण बिना कछुवै नाहिं भावै, जगमाया सब सपननकी ।।
भौसागर सब सूख गयो है, फिकर नाहिं मोहि तरननकी ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर आस वही गुरु सरननकी ।।५।।

शब्दार्थ : लगन=प्रीति । कछुवै=कुछ भी। सपनन की=स्वप्नों की, मिथ्या। सूख गयो=समाप्त हो गया।

प्रकीर्ण

राग पीलू

देखत राम हंसे सुदामाकूं देखत राम हंसे ।।
फाटी तो फूलडियां पांव उभाणे चरण घसे ।
बालपणेका मिंत सुदामां अब क्यूं दूर बसे ।।
कहा भावजने भेंट पठाई तांदुल तीन पसे ।
कित गई प्रभु मोरी टूटी टपरिया हीरा मोती लाल कसे ।।
कित गई प्रभु मोरी गउअन बछिया द्वारा बिच हसती फसे ।
मीराके प्रभु हरि अबिनासी सरणे तोरे बसे ।।१।।

शब्दार्थ : राम=यहां श्रीकृष्ण से आशय है। साथी=सखा। फूलडियां=ज्योतियां। घिस्या=घिस गये। उभाड़ै=फूल गये। पठाई=भेजी। तान्दुल=चावल। टपरिया=झोंपड़ी। हसती=हाथी।

राग नीलांबरी

सूरत दीनानाथ से लगी तू तो समझ सुहागण सुरता नार ।।
लगनी लहंगो पहर सुहागण, बीतो जाय बहार ।
धन जोबन है पावणा रो, मिलै न दूजी बार ।।
राम नाम को चुड़लो पहिरो, प्रेम को सुरमो सार ।
नकबेसर हरि नाम की री, उतर चलोनी परलै पार ।।
ऐसे बर कों क्या बरूं, जो जनमै औ मर जाय ।
वर वरिये इक सांवरो री, चुड़लो अमर होय जाय ।।

मैं जान्यो हरि मैं ठग्यो री, हरि ठगि ले गयो मोय।
लख चौरासी मोरचा री, छिन में गेर्‌या छे बिगोय।।
सुरत चली जहां मैं चली री, कृष्ण नाम झणकार।
अविनासी की पोल मरजी मीरा करै छै पुकार।।२।।

शब्दार्थ : सूरत=सुरत, लय। नार=नारी। लगनी=लगन, प्रीति। पावणा=पाहुना, अनित्य। चुड़लो=सौभाग्य की चूड़ी। परलै=संसारी बन्धन से छूटकर वहां चला जा, जहां से लौटना नहीं होता है। गेर्‌यो छै बिगोय=नष्ट कर दिया है। पोल=दरवाजा।

राग काफी—ताल द्रुत दीपचंदी

मुखडानी माया लागी रे,
मोहन प्यारा।
मुघडुं में जोयुं तारूं, सव जग थयुं खारूं,
मन मारूं रह्युं न्यारूं रे।
संसारीनुं सुख एवुं, झांझवानां नीर जेवुं
तेने तुच्छ करी फरीए रे।
मीराबाई बलिहारी, आशा मने एक तारी,
हवे हुं तो बडभागी रे।।३।।

शब्दार्थ : माया=लगन, प्रीति। जोयुं=देखा। तारूं=तेरा। थयुं खारूं=खारा, अर्थात् नीरस हो गया। एवुं=ऐसा। झांझवानां=मृग-तृष्भा। जेवुं=जैसा। फरीए=घूम रही हूं। हवे=अब।

राग मिश्र काफी--ताल तिताला

अब तौ हरी नाम लौ लागी।
सब जगको यह माखनचोरा, नाम धर्‌यो बैरागी ॥
कित छोड़ी वह मोहन मुरली, कित छोड़ी सब गोपी।
मूड़ मुड़ाइ डोरि कटि बांधी, माथे मोहन टोपी ॥
मात जसोमति माखन-कारन, बांधै जाके पांव।
स्यामकिसोर भयो नव गौरा, चैतन्य जाको नांव ॥
पीतांबर को भाव दिखावै, कटि कोपीन कसै।
गौर कृष्ण की दासी मीरा, रसना कृष्ण बसै ॥४॥

टिप्पणी : ऐसा जान पड़ता है कि वृन्दावन में श्री जीव गोस्वामी से भेंट होने के बाद चैतन्य महाप्रभु का गुण-कीर्तन इस पद में मीराबाई ने किया था।

'मंडल' से प्रकाशित
धर्म-अध्यात्म साहित्य

□

- अनासक्ति-योग
- बुद्ध-वाणी
- श्रीअरविन्द का जीवन-दर्शन
- बुद्ध : जीवन और दर्शन
- ईसा : जीवन और दर्शन
- विनय-पत्रिका
- भगवद्गीता
- गोस्वामी तुलसीदास के सुबोध दोहे
- कबीरसाहब की सुबोध साखियां
- वृन्द कवि के सुबोध दोहे
- रहीम के सुबोध दोहे
- गीता-प्रवेशिका
- मीराबाई के सुबोध पद

□□